SHRI GUJRATI ENGLISH MEDIUM HIGHER SECONDARY SCHOOL, DEVENDRA NAGAR, RAIPUR (C.G.)
SESSION 2020-2021

CLASS : 12 वीं

SUBJECT : हिंदी (आधार)

TEACHER'S NAME : डॉ. वीरेन्द्र कुमार साहू

Lesson Plan for the Month : अप्रैल

Week	Chapter/Topic	Learning Out comes	Resources	Activity	Art integration
प्रथम सप्ताह	भक्तिन (महादेवी वर्मा)	भक्तिन महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो स्मृति की रेखाएँ में संकलित है। इसमें महादेवी जी ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का बहुत दिलचस्प खाका खींचा है। महादेवी के घर में काम शुरू करने से पहले उसने कैसे एक संघर्षशील, स्वाभिमानी और कर्मठ जीवन जिया, कैसे पितृसत्तात्मक–मान्यताओं और छल–छद्म भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती रही और उसमें हार कर कैसे जिंदगी की राह पूरी तरह बदल लेने के निर्णय तक पहुँची। इसका अत्यंत संवेदनशील चित्रण इस पाठ में हुआ है। इस के साथ, भक्तिन महादवी जी के जीवन में आकर छा जाने वाली एक ऐसी परिस्थिति के रूप में दिखलाई पड़ती है, जिस के कारण लेखिका के व्यक्तित्व के कई अनछुए/प्रच्छन्न आयाम उद्घाटित होते चलते हैं। इसी कारण अपने व्यक्तित्व का जरूरी अंश मानकर वे भक्तिन को खोना नहीं चाहतीं।	पाठ्यपुस्तक आरोह भाग–2 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली से प्रकाशित)	प्रश्न 1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा? प्रश्न 2. दो कन्या–रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्रा–महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं?	
द्वितीय सप्ताह	भक्तिन (महादेवी वर्मा)	भक्तिन महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। भक्तिन महादवी जी के जीवन में आकर छा जाने वाली एक ऐसी परिस्थिति के रूप में दिखलाई पड़ती है, जिस के कारण लेखिका के व्यक्तित्व के कई अनछुए/प्रच्छन्न आयाम उद्घाटित होते चलते हैं। इसी कारण अपने व्यक्तित्व का जरूरी अंश मानकर वे भक्तिन को खोना नहीं चाहतीं।	पाठ्यपुस्तक आरोह भाग–2 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली से प्रकाशित)	प्रश्न 1. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं? प्रश्न 2. भक्तिन महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है ,जो कि उनकी किस रचना से संकलित है ?	

तृतीय सप्ताह	बाज़ार दर्शन (जैनेन्द्र कुमार)	बाज़ार दर्शन जैनेन्द्र कुमार का एक महत्त्वपणू निबधं ह, जिसमें गहरी वचारिकता और साहित्य सलुभ लालित्य का दलभ सयोग देखा जा सकता ह। हिंदी में उपभाक्तावाद एव बाज़ारवाद पर व्यापक चर्चा पिछले एक–डढ दशक पहले ही शरू हई है, पर कई दशक पहले लिखा गया जैनेन्द्र का लेख आज भी इनकी मल अतंर्वस्तु को समझाने क मामले म बजोड़ ह। वे अपने परिचिता, मित्रों से जड अनभुव बताते हए यह स्पष्ट करते हैं कि बाज़ार की जादुई ताकत वैस हमें अपना गलुाम बना लेती है।	पाठ्यपुस्तक आरोह भाग–2 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली से प्रकाशित)	प्रश्न 1. बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या–क्या असर पड़ता है? प्रश्न 2. 'बाज़ारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें है?	
चतुर्थ सप्ताह	बाज़ार दर्शन (जैनेन्द्र कुमार)	बाज़ार दर्शन जैनेन्द्र कुमार का एक महत्त्वपणू निबधं ह। अगर हम अपनी आवश्यकताआं को ठीक–ठीक समझकर बाज़ार का उपयाग करं, तो उसका लाभ उठा सकते हैं अगर हम जरूरत को तय कर बाज़ार में जाने के बजाय उसकी चमक–दमक में फँस गए तो वह असंताष, तष्णा आर इर्ष्या से घायल कर हम सदा के लिए बकार बना सकता है। इस मलूभाव का जैनेन्द्र कुमार ने भाँति–भाँति से समझाने की कोशिश की है। कही दार्शनिक अदांज़ में ता कही किस्सागो की तरह। इसी क्रम मं कवल बाज़ार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्रो को उन्हांने अनीतिशास्त्र बताया ह।	पाठ्यपुस्तक आरोह भाग–2 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली से प्रकाशित)	4. बाज़ार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता; वह देखता है सिर्फ उसकी क्रय शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?	